यदि यीशु न होते, तो हमारी कहानी बहुत पहले ही समाप्त हो गई
होती।

हमारे प्रभु और उद्धारकर्ता, जीवन के प्रधान, राजाओं के राजा — यीशु मसीह — के नाम की स्तुति हो!

पृथ्वी पर कभी कोई ऐसा व्यक्ति नहीं हुआ जो यीशु जितना महत्वपूर्ण और आशीष से भरपूर हो।
आज हम थोड़ा समझेंगे कि वह हमारे लिए इतना आवश्यक क्यों है।

क्या तुम सच में जानते हो कि पवित्र शास्त्र क्यों कहता है कि प्रभु यीशु हमारे लिए मारा गया?

यशायाह 53:5
“परन्तु वह हमारे अपराधों के कारण घायल किया गया, वह हमारे अधर्म के कामों के कारण कुचला गया; हमारी शान्ति के लिए ताड़ना उस पर पड़ी, और उसके कोड़े खाने से हम चंगे हो गए।”

ऐसा नहीं था कि परमेश्वर हमें दण्ड देना चाहता था, और इसलिए उसने अपने पुत्र को भेजा कि वह हमारे लिए मरे — नहीं!
वास्तव में, परमेश्वर का न्याय पहले ही ठहराया जा चुका था, दण्ड पहले ही घोषित हो चुका था, और वह हमारी ओर आ रहा था।
उसी समय प्रभु यीशु ने हस्तक्षेप किया — और हमारे स्थान पर

यदि यीशु न होते, तो हमारी कहानी बहुत पहले ही समाप्त हो गई
होती।

मृत्यु को स्वीकार किया।

कल्पना करो: किसी ने किसी पर पत्थर फेंका है, और जब वह पत्थर अपने लक्ष्य की ओर जा रहा है, तब एक दूसरा व्यक्ति बीच में आकर उस चोट को अपने ऊपर ले लेता है।
यही काम यीशु ने किया। वह दण्ड को मिटाने नहीं, बल्कि उसे अपने ऊपर लेने आए थे। इसलिए उन्हें मरना आवश्यक था!

जिस मृत्यु का उन्होंने सामना किया, वह उनकी नहीं थी — वह हमारी थी।
जिस लज्जा को उन्होंने सहा, वह उनकी नहीं थी — वह हमारी थी। जिस पीड़ा को उन्होंने सहा, वह उनके लिए नहीं, बल्कि हमारे लिए थी।

इसका अर्थ यह है कि यदि उद्धारकर्ता यीशु न आते, तो बहुत थोड़े समय में ही परमेश्वर का क्रोध हम सबको नाश कर देता — जैसे नूह के समय के लोग या सदोम और अमोरा के लोग नष्ट हुए थे।
हम रोते, पीड़ित होते, विलाप करते, और अंत में उसी आग की झील में समाप्त हो जाते।

यशायाह 53:4–6
“निश्चय उसने हमारी बीमारियों को सह लिया, और हमारे दुखों को उठा लिया;

यदि यीशु न होते, तो हमारी कहानी बहुत पहले ही समाप्त हो गई
होती।

फिर भी हम ने उसे परमेश्वर का मारा-कूटा और दु:ख दिया हुआ समझा। परन्तु वह हमारे अपराधों के कारण घायल किया गया, वह हमारे अधर्म के कारण कुचला गया;
हमारी शान्ति के लिए ताड़ना उस पर पड़ी, और उसके कोड़े खाने से हम चंगे हो गए।
हम सब भेड़ों की नाईं भटक गए; हम में से हर एक अपनी ही राह चला गया;
परन्तु यहोवा ने हम सब के अधर्म को उस पर डाल दिया।”

जब बाइबल कहती है: “उसने हमारे दुख उठा लिए,” तो इसका अर्थ केवल हमारे शारीरिक रोग या सांसारिक परेशानियाँ नहीं हैं। (हालाँकि वह भी सत्य है) — लेकिन इसका मुख्य अर्थ यह है कि जो पीड़ा और दुख हमें परमेश्वर के न्याय के कारण झेलने पड़ते, उन्हें यीशु ने अपने ऊपर ले लिया।
वह हमारे स्थान पर दु:खी हुआ, वह हमारे लिए मारा गया।

इसलिए यीशु ने कहा:
मरकुस 14:34
“मेरा मन बहुत उदास है, यहाँ तक कि मैं मर जाऊँ।”

अब देखो, यीशु हमारे लिए कितने मूल्यवान हैं!
क्या तुम प्रभु की कद्र करते हो?

यदि यीशु न होते, तो हमारी कहानी बहुत पहले ही समाप्त हो गई
होती।

क्या तुमने अब तक अपने जीवन में यीशु के महत्व को पहचाना है?

मत भूलो: परमेश्वर का क्रोध आज भी बना हुआ है — और वह और भी भयंकर है उनके लिए जो क्रूस के कार्य को तुच्छ समझते हैं।

इब्रानियों 10:29
“तो सोचो, वह व्यक्ति कितना अधिक दण्ड का अधिकारी ठहरेगा जिसने परमेश्वर के पुत्र को रौंदा और उस वाचा के लहू को, जिससे वह पवित्र किया गया था, अपवित्र ठहराया, और अनुग्रह के आत्मा का अपमान किया!”

क्या तुमने यीशु को अपने जीवन में स्वीकार किया है?
यदि नहीं — तो तुम किस बात की प्रतीक्षा कर रहे हो?
याद रखो, कृपा का द्वार सदा के लिए खुला नहीं रहेगा।
आज ही पश्चाताप करो, अपने पापों को त्याग दो, और यीशु मसीह के नाम में जल-बपतिस्मा लो, ताकि तुम पवित्र आत्मा का वरदान प्राप्त कर सको।

प्रभु तुम्हें आशीष दे।

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP

[illegible] [illegible] a [illegible], na [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] na [illegible] na na [illegible]

GROUP....

Share on:
WhatsApp